...No.: RAJBIL/2013/54153

ISSN : 2322-0074

अलख दृष्टि

ALAKH DRISHTI

(भाषा, दर्शन, साहित्य, संस्कृति एवं मानविकी की संवाहिका त्रैमासिक शोध पत्रिका)

वर्ष-7 • अंक-01 • त्रैमासिक • जनवरी-मार्च, 2019

A Peer Reviewed Research Quarterly

Scanned by CamScanner

सामाजिक समरसता के नवनिर्माण में मूल्य शिक्षा की भूमिका

जयप्रकाश सिंह, डॉ. विष्णु कुमार

सारांश

जिस दौर में हम लोग जी रहे हैं उस दौर का सबसे बड़ा सच है कि मानवता, नैतिकता और सहिष्णुता का तार-तार होना दिख रहा है। निरन्तर मानवीय मूल्यों का ह्रास होना, दैनिक समाचार पत्र, टी.वी., समाचार या अन्य सोशल मीडिया देखने और सुनने के बाद असल में समाज का एक ऐसा चेहरा हमारी आंखों के सामने मुखरित होता है जो हमें लम्बे समय तक झकझोरते रहेगी। यदि इस तरफ हमने ध्यान नहीं दिया तो आने वाली पीढ़ी हमें माफ नहीं करेगी। इस विषय पर अपनी सोच एवं बहुत सारे क्षोभ, पीड़ा, चिन्ता और सवाल को यूं ही अनसुना छोड़ देना वस्तुतः संवेदनहीन समाज की पहचान होगी।

प्रस्तावना

भारत में विभिन्न जाति, धर्म, सम्प्रदाय के लोग निवास करते हैं। सभी लोग अपने सामाजिक विविधता, स्वभाव, क्षमता, वैचारिक स्तर, भाषा, खान-पान, देवी-देवता, पंथ-सम्प्रदाय, जाति व्यवस्था आदि विधिताओं में जी रहे है। प्रत्येक समाज अपने जाति भेदभाव के कारण सामाजिक समस्याएं और विषमताओं को जन्म देती हैं जिससे आपसी संघर्ष बढ़ता है। प्राचीन भारत से ही सामाजिक व्यवस्था (वर्ण व्यवस्था) कर्म पर आधारित थी। धीरे-धीरे यह कर्म व्यवस्था से वर्ग व्यवस्था और वर्ग व्यवस्था से वंशानुगत होते चले गये। मध्य काल तक पारिवारिक व्यवस्था तक सीमित होकर जाति एवं वर्ग की पहचान बन गये। इस समय समाज की व्यवस्था का निर्धारण कर्म एवं क्षमता के आधार पर न होकर जन्म के आधार पर हो गई थी। साथ-ही-साथ ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत के स्वाभिमान तथा सामाजिक सौन्दर्य पर प्रहार (फूट डालो और राज करो की नीति) से भारतीय अपनी वैभवपूर्ण समरस जीवन पद्धति से दूर उदारसीनता की ओर चले गये। वर्ण-व्यवस्था ने समाज में आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, अन्याय का वातावरण बना दिया जिससे सामाजिक विषमतायें, वर्ण-जाति व्यवस्था ने देश में सामाजिक विषमता

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner